क क्को कोड रो....

कन्हैयालाल सेठिया

परगासक :
दिव्या प्रकाशन
सुजानगढ (राजस्थान)

पोथी मिलणै री जग्यां :
श्री जयप्रकाश सेठिया
३, मैंगो लेन
कलकत्ता-७००००१

सगळा इदकार लिखारै रा है।

मोल पचास रिपिया

मुद्रक : भागचन्द सुराना
सुराना प्रिन्टिग वर्क्स
२०५, रवीन्द्र सरणी
कलकत्ता-७००००७
दूरभाष : ३९-४३६३

क !

बरणमाळा रो पैलो आखर 'क', कलम री 'क', कागद री 'क', कविता री 'क' र म्हारै नाव रो आद आखर 'क'। कोनी चाली 'क' स्यूं आगै म्हारी भणाई। 'क' ही म्हारी कमाई'र 'क' ही म्हारी अणवाई।

अका पुग ग्या 'हँ' ताँई मैं मानूं वां री खिमता,
मनैं आणद वा नै माथा नमता।

११ सितम्बर १९८९

—कन्हैयालाल सेठिया

मांडणा

जयकिशनदास सादानी
मोहनलाल लोढा
सीताराम महर्षि
श्रीचन्द बेद
दुर्गादत्त माटोलिया
नै
घणै मान

क फो कोड रो····

कक्को कोड रो !

लिख दीन्ही
पोथ्यां निरी
पण कठै आयो
हाल माडणो !
कोनी चालै
कक्कै कोड कै स्यूं
आगै वरतो,
करुं निरथक
घस घस'र इंडोळ्यां
पाटी - चीवणी
घणी आंतरै है हाल
बी मारसेर घन्तो !*
दीखै परतख
पड़ै मिरजण रै पैली
धरती नै तपणो,
करै आम्यां'र मनूळिया
भिन्ट
धोरां री माजनो
जद बणै
अंतम री पीड
घुमट'र
कळायण,
फेर वण ज्यावै वा
मोरियां रै
टहुकां स्यूं
रमायण।

३-१०-८८

* वरणमाळा री आखर'स'

काळ

कोनी
चुरा सकै कोई
वगत री
यांख
वाँ री निजर में
सगळा पग'र पांख,
वो ही बैठो गूंगे
बीज में
हसते फूल में
रूस्योड़े कांटे मैं,
कोनी वीं रे वासतै
कोई डूंगर ऊंचो
कोई समदर गेरो
वीं रे ही
अलख हाथां मैं
सिस्टी री सांद री मूरी
कोनी सुणीजै
चंवल करता बटाऊड़ा नै
वीं री टिचकारी !

१-१०-८८

मील रो पत्थर !

गरज
गेला री
पगा नै
कोनी खगा नै
जका री दीठ में
गिगनार
उडै पाख पसार
पड्यो सपटमपाट
न टेढो न आटो
न काकरा न काटो
जे कठेई कोई
मील रो पत्थर
तो वो
उगतो 'र आथतो
सूरज ।

६-१०-८८

अणभूत !

कर सक्यो है
कुण
क्यां रो ही
निवेड़ो ।
कोनी गिणीजै
समदर री लेरां
गिगनार रा तारा
डील री रूआंळी
मन रा विचार,
याघ री
गिणती री भणाई
दीठ नै
पुद्‌गळ स्यूं
कर दी
पचभूत
चेतणा नै चेताचूक,
चावै जे
अणभूत्यो
विरमांड,कर ले
दीठ नै मांय
वणज्या सूरदास ।

६-१०-८८

पीड़ रो अमरित !

मथ'र
मन रो
समन्दर
काढ्यो
सबद रै
घड़े में
पीड़ रो
अमरित,
कोनी
भाज्या लारै
देवता'र राकस
जाणै इण
संजीवण रो
सुवाद
खाली मिनख री
संवेदना !

८-१०-८८

साखी !

विस्यै
खिण मैं
पछमी
किण रै
गरभ मैं
थीज
करै
इण रो
निरणै
जीव रा
ससकार,
हुसी
हुण रो साखी
बो अदीठ।काळ
जको
कोनी घटण दै
कोई
मणहुणी !

८-१०-८८

अंतरिख रा बटाऊ !

कोनी कर सक्यो
कम
अंतरिख में
गयोड़ै
मिनखां री विचरण
चनरमा री आकर्षण !
लूखा डूंगर
सूखा समदर
निरजीव धरातळ
न पून न पाणी

कोनी कोम सकी
से जाणकार्यां
वीं रा विशेषण,
बो तो
वो ही रसेश
करै रस वर्पण
लागै फाल
फळै फळ
हुवै सजीवण
कण कण
करै देखर'र
आयोड़े नेहर
रतनागर
चुगै अंगारा
मोबी चकोर
मान'र सुधाकर
अडीकै
शरद री पून्यू नै
देखणियां ताज
लागै
कभी क्यानणी मैं
सैंदेही मुमताज
करा दै चीत
धोळै दोपारां
चाद नै
गोल मटोळ चैरो
कोनी भुजाण सकै
कुदरत री सांच नै
सपनां रैं वैरी
विग्यान रो
पगफेरो ।
८-१०-८८

मन !

फिरूँ लेतो
अचपळे मन स्यूं
ओला
कोनी लेण दे
जक
ई री मक
रवै
लाग्योड़ा लार
घालै फोड़ा
इण रै जायोड़ा विचार,
वरज दियो
कती वार ?
पण कोनी सुणण नै त्यार
म्हारी वात
ओ निलजो
लगा'र घात
अड़ीकै दिन'र रात
कणां चूकै फाळ
मागसी कतीक ताळ ?
जाणै ओ ठेटो
जीव रो सभाव
कोनी सावटै
आपरो विछायोड़ो जाळ।
६-१०-८८

सवाल !

किया मिली
तनैं
मिनख री जूण ?
क्यू कोनी बण्यो
कीडी'र मकोडो
माखी'र माछर ?
कांई ओ आवक सजोग ?
का ईण रै लारै कोई जोग ?
आयो के कणाई
मन में
ओ सवाल ?
सुणीज्यो के
माय नै स्यू
कोई पडूतर ?
कोनी चित सकै

आ बात जिनावर
जका रो
सहज बाध
प्रजनन'र उदर,
दीन्ही
तनैं कुदरत
आ खिमता,
पण तू
थकां दीठ
हू'र आधो
भाजै तिसणा रै लारै
कोनी करै विचार
काईं सार काईं असार !
गमगी मन रै अंधेरै में
आतम री चेतणा
गिटगी वासणा
हियै री सवेदणा,
कठै गई स्याणप !
तू साव भोळियो
मान लियो निज नै
जाबक हाड'र मास रो
खोळियो,
ओ थारो अभाग
पण तू जाग
उठ परमाद त्याग
खिडथा पेली
पचभूत रो मेळा
सुण
जीव रै बैरी
काळ रो हैलो !

८-१०-८८

निरथक !

आ'ग्यो
आघो
छूटगी लारै
मंजल
यावड़ पाछो
कोनी चालणै री
कोई अरथ
जे नहीं पुगै
मिनख
ठौड़सर !

स्याणो !

सुण'र खुडको
कोनी खोले
झटसी'क मोडो
पूछे पैली
कुण ?
सुण
सैंधी बोली
सिरकावै
आगळ
पण कोनी
चितणा उडी
जे हूँतो
स्याणो
कोनी वढती
बामनावा
समझ'र
थारी आख नै
धरमशाला !
१०-१०-८८

करसो !

बावै
मिट्टी रै खेत में
करसो गिगनार
सूरज रो बीज,
सींचै हाळण पून
काढ'र समंदर रै
कुअै स्यूं
बादळा री भरी चड़स,
पाक्यां फसल
चिगदै
अंधेरै रै रिगदै स्यूं खळो
निकळै तारा रा दाणा
आवै चुगण नै
खोल'र
ऊजळी पांखा
हिल्योड़ो
चांद कबूतर !
१२-१०-८८

मतीरा !

किया
ल्यायो हूँ
उठा'र
सोटा सट्टै
पीळ रै खेत स्यूं
सबदा रा मतीरा
जाणै आ बात
म्हारो जीव !
अबे भलांई कर कर'र लीरा
कुचर कुचर'र
खुपरया
पिओ अमरित सो
पाणी
पण अती यानै
म्हारी मोळावण
राखीज्यो बीज ठाया
आगली रुत गाणी !
१२-१०-८८

सभाव !

जे
सोधतां
हीरो
पड्ज्या
आंख में
रावळियो
फिरे देतो
रेत ने आळ
काढतो गाळ
पण खिमावान
धरती
जाणे मिनख रो
नुगरो सभाव !
१२-१०-८८

पतिंगा ।

कोनी आवै
मान'र लो नै
चम्पा री कळी
रस रा लोभी
भवरा,
चढसी
ईं सोनै री सूळी
वै भावुक पतिंगा
जकां नै है
च्यानणै स्यूं हेत ।
१२-१०-८८

धिंगाणियों !

उडतो ही
गिगनार रै
आळै स्यूं हंस
बड़ग्यो
माय कागलो,
बण्यो जोरी मरदी
मानसरोवर स्यूं
चुग'र ल्यायोड़ा
अमोलक
नखत मोत्यां रो
धणी !
१२-१०-८८

आगियो !

भाजगी
योधरडी पून
बुझा'र
दियो,
पण कोनी लेण दे
निसक नींद
अंधेरै नै
एक आगियो ।
१२-१०-८८

डोरो !

कोनी छोडै
डोरो
सूई री लार
जठै ताईं
नहीं मिलमी
बीं नै
बीं रो परवार !
१२-१०-८८

बीज !

ढ़कीजग्यो
कळायण स्यूं सूरज
उतरग्यो
दिन रो मूंडो,
अंधेरीजग्यो आभो
आ'र बैठग्या
आळां मैं पंखेरू
पण सुण'र छांटां रो
बोलाळो
जागग्यो धरती मैं
सूतो सिरजण !
१३-१०-८८

भोळा !

भूल'र
आपरो सभाव
कोनी छोडै
सूळां री देखादेखी
मुरझायां पछै डाळ
केई भोळा फूल,
कोनी समझै
डफोळा
रूमग्यो बां स्यूं
मूळ !

१३-१०-८८

मिनख !

बोले
रिण रोही मे
मोड बिलाव
पेट दूखे
होको पीस्यू
करे
थाळा मे बैठी
कमेडया
कूटूं छू
पीसूं छूं
लडे सरत'री राड
बोर्डरडी लैलडयां
तू गा तू गा,
फिरै अडावां मे
हैकड तीतर
करता तू कर तू कर
आवै चीत अद
बाळपणै मे
सुणीडी बाता
हुवै वीं खिण
रस स्यूं गळगच मन
सुळ्योडा हा
कती अपणायत स्यूं
कुदरत'र जीवण
पण बणा दियो
जीभ डाकण
मिनख नै
सरवभखी रावण !
१३-१०-८८

धिणाप !

रच मकै
अकूरड़ी पर
रैणियो सरभंगी
अचूक मंतर
घणा मकै
ठोठ गुवाळियो
मधरा लोकगीत
कर मकै
अणभणियो करसो
काळजयी कविता
एकेर मकै
मळयो दोणियो
कमतरियो
अनूठा चितराम
कोनी
कळांवां पर
किण रो ही धिणाप !
चाहीजे दीठ
अणभूतणै री खिमता
निरथक
मोनै री कलम'र
चादी री दवात
सिरजन रा सीरी
घोचा'र कांकरा
का' सोनल धूळ
जकी मिस्टी रो मूळ !
१४-१०-८८

दर्पण !

टूट ग्यो बो
दरपण
हो जकी स्यूं
मरवण री
दीठ री सगपण
हुगी निढाळ सुहागण
बरसै नैणां स्यूं
सावण
पण
डुहार'र
लेगी जकी हाळण
बा देख्यो
ढ्योड़े टुकड़ां मैं
पैली पोत
निसंक हू'र
आप रो
रूप'र जोबन !
१५-१०-८८

आदृत !

खोल्यां
बिन्यां ही
हटड़ी रो पूरो किंवाड़
कर दे पूछणो सरू
छोरो
कठै पड़ी है
कतरणी
सुई'र डोरो
कोनी करै
चिन्यो घणो जीव नै दोरो
मिल ज्यावै सोक्यू सोरो
आ नीत
कोनी सधण दै दीठ
रह ज्यावै आदमी
कोरो रो कोरो ।
१५-१०-८८

गुण गाहक !

उड उड'र
काळे कोसां स्यूं
पूगगी
भणकता भंवरां री भीड़
पण कोनी आई
पाड़ोसी कांटै नै
फूल री सौरभ !

१६-१०-८८

चोरटी उमर !

फिर लियो
आखै गांव में
कोनी लाध्यो
म्हारो चैरो ।
करै बात वासींदा
कुण है ओ अणसैंधो
मुझे देख'र
गली रा गंडकड़ा
करू चीत
हुवै न हुवै
ले'गी चोर'र
उमर
म्हारो उणियारो
कठै फिरूं सोधतो
पड़्यो अबै अधारो !

साच !

बणावै
कुमार
लिछमी री मूरत
बपराणै खातर दाणां,
बो जाणै
चढसी
ईं पर
मेवा'र मखाणां !
१७-१०-८८

कविता !

मरगी
काल
भूख स्यूं बायेडा
करती
बापडी कविता
लेगी उठा'र
लावारिश लाश नै
नगर निगम री
मुरदा गाडी
आज बाची
छापे में
राखी है
गांवधणी रै बडेरचारे में
विराट
शोक सभा ।
१८-१०-८८

परमाद !

देख'र सामनै
दरहो
घर लियो वै'तो पाणी
मन मीठो
चल्यो चाळ स्यूं फेर
लै'र विमाई आगै
पण फिरग्यो अधारो
घणग्यो कादो
फैलगी चौफेर
दुरगिन्ध !
१६-१०-८८

भूख !

देख'र
धरती पर
बिखर्योड़ा दाणां
सांवट'र पांखां
आ'र बैठग्यो
पखेरू नीचै
कोनी भूख स्यूं
बडो
गिगनार ।
१९-१०-८८

रात दिन !

पड़्यो
सूरज री
धधकती भट्टी में स्यूं
उछळ'र बारै
एक अधगळ्यो कोयलो
हुयो अंधेरो,
नाख दियो
उठा'र
वगत रै चौंपटै स्यूं
गिगनार
पाछो भट्टी में
हुयो सवेरो।
२०-१० ८८

फरक !

बन्द आंख
मीरा
खुली आंख
कबीर
भगती
जमना'र
ग्यान
गंगा रो नीर
२०-१०-८८

निराकार-आकार !

कोनी-त्याणै सकै
लपट नै
हथेळी मैं
त्याणो पडसी ठूठियो सागै,
कोनी अणभूत सकै
इया निराकार नै
राखणो हुसी आकार मुडागै ।
२०-१० ८८

अंधेरो'र च्यानणो ।

कोनी
अमूझै
बन्द कोटडी मे
अधेरो
पण राखसी जींवतो
च्यानणे नै
खुलो झरोखो !
२०-१०-८८

जलम-मरण !

नित हुवै दिनुगा
म्हारो नुंवो जलम,
करूं चीत
लारलै दिन री भूलां
किण नै कया
करड़ा सबद
किण पर करी रीस
किण री करी निन्दा
सोच'र हुवै घणो पिसतावो
करूं विचार
कोनी करूं अबै चूक
पण खिण में
फिरज्या बारोकर परमाद
कोनी रवै याद धारणा,
मुरछीजज्या चेतना
बैठ ज्या फेर जा'र
मुगलवाड़ै पर मन री माखी
चल्यो जावै अकारथ
एक जलम और
पाछा गैळीजै नैण
दबोच लै फेर
आ'र
मौत री छुट माण नींद !
२२-१०-८८

कायर !

माजगी
चमा चाळ'र
कुचमादी पुन
हु'गी बी'र
सौरम रै लारै
भवरा री भीड़
थाकगी उडतां'री पांखां
कोनी लाद्यो फूल
आंथमग्यो सूरज
फिरग्या आडा सूळ
जणां कर'र भण भण
कयो डरता
म्हे
कोनी फूलां रा रसिया
म्हे तो हां रात रा बसिया ।
२२-१०-८८

कविता ।

लुकयोड़ा है
रूख रै
रूखे करूप कठोर तणै मैं
अणगिनत कंवळा पानड़ा
फूठरा फूल, मीठा फळ
पण वै आमी बारे
जद झुलासी
रूत रो बायरो
बिया ही
काव्या
सबदा री घूघटियो
वैठी अडीकै
कोई दीठवान् नै
अनन्त अरथां री धिराणी
लजवन्ती कविता ।
२३-१०-८८

झूठ-साच !

खुले
सुवै चोपड़ै
झूठ रै मै'ल री
पोळ
वड़ज्या
दड़ाछट
होदे समेत हाथी
ऊभी
गाव रै गोरवैं
इकलखोरड़ी साच री झूपड़ी
वड़ सकै मांय
नवा'र माथो
कोई चेतना रो धणी !
२४-१०-८८

कारीगर।

छाटणा पडै
हरेक रचणा सारू
परवाणै रा सबद
सुस ज्यावै काठा स्यूं
कवळा पग,
ढीला स्यूं
कोनी भर सकै डग
जका जाणै आ साच
यै उठासी
लै'र माप
कलम'र कागद।
२४-१०-८८

आपडु घरम !

उतरज्या
जैकाण'र ऊंठ
डुरज्या ऊपाळो
फाल'र मूरी,
पड्यो है
मुडागे
पमल्योड़ो
मारग री छाती पर
पाड़ोसी धारो,
कर टाळ
चाल ऊजड़
पैर पकड़ लेई
या गेली
जकै स्यू जुड्योडो है
थारी मजळ रो मारग।
२६-१०-८८

रीसलो मिनख !

जे आवै
हाते दूध पर
मळाई
वो आवै
रीसले रै
मूंडे पर
लुनाई,
राखै
माथे नै ठंडो
बो बाजै
हिमाळो
नहीं' स
मै माटा
कोई धोळो'र
कोई काळो !
२७-१०-८८

धरती'र गिगनार !

कोनी
धरती रो कोई
आप रो सभाव
हुवै तातो
तपतो ही सूरज,
ठंडो
उगता ही चांद,
आ कठपुतळी
नाचै नचायोड़ी
गावै सिन्धु राग
समदर रै गायोड़ी
उड़ै अचपळी पून रै
उडायोड़ी
कोनी निज री सत्ता ?
पण रवै हर खिण
आपरी मोय में
मोटो अवधूत
गिगनार !
२७-१०-८८

रात !

अंधेरो
आंख री काजळ,
तारा
डील री हंसाळी,
कुण कवै
रात नै काळी !
वीं री ही रूप
दीठ
दिवलै री उजाळी !
२७-१०-८८

सिड़्या !

मत चास
दिवलो,
दाक ज्यासी
सिड़्या रो डील,
आ तो
इयां ही वधपायल
पड़्यो भोली री
सूरज रै बुझते खीरै पर पग
उपड़्या फाला
वेंवें वां नै
संवेदण हीण मिनख
तारा ।
२६-१०-८८

म्हारी मनस्या !

जे हुवै
म्हारै सारै
कोनी फिरू ले'र
कलम री डांगळी
सिड्या सुवारै
रूळेड सबदा रै लारै,
मनैं लागै आछो
हल'र खेत,
पगा मैं पमरथोडी
सोनल रेत,
निपजाऊ
मोरया, मूघो धान,
निरखू च्यारू मेर

फूल'र पान,
सुण बैठ'र
खेजड़ी री छयां
पपैइयां री टमरक टू
कबूतरां री गटर गूं
मोळा मिरचां री [illegible] सू
देखू मोरियां नै
ताणतां छतरी
नाचती
थां रै गागै
हरी कचन दूबड़ी
फरू बाळपणे रै
साईनां नै चीत,
टेरू अलगोजे मे
कोई मांळ्यू री गीत
कोनी मनैं
छप्पण भोगां री भावण
कच कच'र जीमू
बाजरी रा सोगरा'र
कांदां रा लगावण,
• पीऊं गटगट
लोटड़ी री ठरयोड़ी पाणी
हुवै दिद राही मै
बांध्योड़ी टाणी,
मनैं लागै
मठप्पाणी
भाग दौड़ री जिनगानी
पण कद हुवै
किण रै ही मन री जाणी ?
लिख्योड़ो करम मे
तेली री घाणी ।
११-८-८८

बीज !

ले लिया
पड़ता ही छांट
पण
धरती री गोदी में सूतो
बीज,
आग्यो
सिरजन रो छिण,
कोनी दबै अबै
कठेई बीच में
जठै तांई बण'र
पाछो बीज
नहीं कर देसी
आप रै आपै नै
विसरजण !
३०-१०-८८

पसवाड़ो !

फिरतां ही
बगत रो पसवाड़ो
बैठग्यो पींदै
मोटो सूरज,
कढाबै
दिन रै
धणी री कूट
थोबरका दिवला,
निसरग्या बारै
तोड़'र
अंधेरै री
काल कोटड़ी
बागी तारा
पण कोनी चुण सक्या
एक मत हू'र
कोई नेता
फाटगी
आपमरी की
थूका फजीती में
फेर भाक !
२ ११-८०

हूणी अणहूणी !

जायी है
किण री मा
इसड़ो मोट्यार
जको गिण लै
मौत रा दांत ।
पकड़ लै
वगत रो हाथ ।
राख लै
भाजती उमर नै
घाल'र गळबाथ ।
चल्या गया कता
तप तप'र धूणी
भोग'र जूणी
कद टळी हूणी ।
इयां ई मुवै अर भूणी
कोनी हुवै अणहूणी ।
२-११-८८

तारा'र सूरज !

रात रै
काळै केसां मे
गूंथ्योड़ा
लाखीणां मोती
तारा ।

भळ्ळो उतारयोड़ै
दिन रै माथै पर
कनारी री टोपी
सूरज ।

१७-११-८८

काळजयी !

दिप दिप दीपै जोत
अधेरो के कहमी !
देमी निज रा पोत
कलख री गट दहसी !

चीम मकै कर मौत
गीत री रस वहसी,
घिसगी काळ करोत
सबद री जड रहसी !
१७-११-८८

दिवलो (१)

बाटे नेह नै
कर'र उजास
कोनी बिळसै आप,
जाणै वो
छिणाप, पाप !
२८-१-८६

दिवळो (२)

करै
खय
तप'र
खिण खिण
अंतस रो राग।
कर दी
विराग ऊजळी
दिवलै री दीठ !
२६-१-८८

दिन-रात]

१

तम रो डील बडाळ घणो पण
आवक काची झाती,
परै चूठियो कोनी सकै
तमक दिये री बाती ।

२

छोटो चांद सिलाकी आभो
अे बिदाम सा तारा ।
झुटै च्यानणी री ठहाई
बरसै रस री धारा,

३

जलम्या तम रावण रे कुळ में
भगत बिभीषण तारा,
देख फाटतो भाक गया रळ
सूरज सागै सारा

४

गगन चौरसी तारा खीरा
तिमिर हुओ धर ऊपर,
सेकै बगत रसोयो बैठो
दिन रो फलको वीं पर ।

५

तिमिर रूंखड़े रै तारां रा
लड़ालूम फळ लागै,
मावस माळण रा पग सुणतां
चांद चोरटो भागै ।

६

करी नखत छांटां स्यूं गीली
तम री सूखी माटी,
काळ कुमार भाण रो दिवलो
रच्यो जणां पौ फाटी ।

७

रगड़ गगन माचिस स्यूं तूळी
ऊषा री सिलगाई,
बुझ्यै भाण रै दिवलै री लौ
फेरूं बगत जगाई !

८

मा माटी री कूख जलमिया
औ दिवला अवतारी,
काढ़ किरण-शर लौ तरकस स्यूं
रात ताड़का मारी !

९

बजरमान तम गढ़ री भींतां
पण कद लागै जेज !
करै दियै री नान्हीं सी लौ
परकोटै में बेझ ।

१०

तम हाथीड़ो तारा कुतिया
भाजै भुमता लारै,
लौ अंकुश स्यूं दिवलो मावत
राखै इण नं मारै !

११

बड़े घरां में तिमिर धिंगाणे
बरज्यो रवै न सारे,
दिवलै री लौ दे चनपट री
रोज माजनो मारै ।

१२

मांझळ रात सावळी जमना
दिन गगा रो पाणी,
नेह भवर में डूबी मीरा
तिरग्यो कवीरो ग्यानी ।

१३

गगन चालणी महा काळ री
तारा बेझ अशेप,
छण ज्यासी जद तिमिर कूटळो
रह ज्यासी दिन सेस ।

१४

दूज चांद ज्यू चाक हाथ में
छोरो वगत पढेसर,
तारा री बारखड़ी माडी
तम री पाटी ऊपर ।

१५

कत भाण जद भटक बावड्यो
हरख उषा घर नार,
काळ हथेळी ऊपर धरियो
दिवस पतासो त्या'र ।

१६

देख वारणै आयो तम नै
काढ्यो लौ रो टीको,
दिवलै री करुणा मावस रो
रग कर दियो फीको ।

रोहीड़ो ! (१)

कद स्यूं
ऊभो है

आपरी
हरणा रै पाण
रूखा पुगवा स्यू
रुदयोड़ो
निरजळ धरती पर
रोहीड़ै रो रूप !
कोनी कर सकी
घेताचूक
सूरज री खरी मीट
बळबळती लूआं,
वैसे इण री नग नग में
वहेरां रो बळिदानी रगत,
चीत है हैं ने
ये रणबंका गायडमल
सीलवंती पदमण्यां
जथा घटा'र मायो
जगा'र जौहर
राखयो आमण रो मान,
ईं रा ही धरम भाई
गीजड़ा'र फाग
बणाणै रै जोग
जगां री
ऊजळी कीरत,
करै जद थे, सुण्याइ मैं
आपस में बतळ
सुण'र थम ज्यावै
एयें मारग भागतो बगत
खुल ज्यावै इतिहास री
चणदीठ
तीसरी आंख !

४ ७-८६

रोहीड़ा ! (२)

लिया
नैणां मैं

खड़े फूलां रा सपना
ऊभो
रिण रोही में
वजर देही रोहीड़ो,
दियो
इण नै जलम
कचन वरणी
कुआरी धरती,
कोनी मळ्योड़ा
आठीनै
कोई रै पगां रा खोज
टळगी परे स्यू ही
चुगलखोर गेल्यां,
रमै छयां तळे
भोला सुसिया
करे हतायां
थातेरण कमेड्यां
लडावै
कवळा पानड़ां नै
हैताळू पून
पण मनासी
फता दिन खेर
बापड़े
यकरिये री मा ?
फिरै
सोधती
इण नै
जीव री वैरण
दातली करोत ?

१५-४-८६

भूल !

खा वोकरी
भूखी आखया
आखी उमर
घोखो,

कठै पडी ही
कोरै
रंग-रूप
चटक मटक में
हेत री सौरम ।

सगळा हा
कागजी फूल
आई समझ में भूल
सिइयां ढळ्यां,
जद वे रया
विगस्योडा
वियां रा वियां !
१५-६-८६

जुग धरम !

सीखग्या
स्याळो
खाजरू री
बोली,
कोनी करणी पड़े
अबै
मच सारू
घणी
भाग दौड़
आ ज्यासी
मतै ही
चाल'र
माद मैं
भेडा भोळी ।
१४-६-८६

[

आदमी !

मिन्न ज्यासी
घणाई
हिन्दू'र मुसळमान
बौद्ध'र किरस्तान
पण सोधणो पड़सी
इण आडी भीड़ रै जंगळ में
निखालिस आदमी ।
कोनी छापा'र तिलक
डाढी'र चोटी
बीं री पिछाण
कोनी लाधै बो
मंदिर'र मसजिद
मठ'र गिरजाघर में
बो तो है
थारै माय ही लुकयोड़ो
आसी बारै
बीं त्रिण
जद तू उतार'र मुखोटो
देखसी सगळा मिनखां में
बाप'र भाई
हरेक लुगाई में
बेटी'र माई ।
६-७-८६

मोटो सिरजण !

लाथ ज्यामी
रिंद रोही री
ढाणी लकायल में
दिवळो'र दरपण
चावे हरेक पग
देखणो मारग
हरेक दीठ
चणियारी,
कोनी कर सक्यो मोटो मिनख
आज ताईं
आ दोन्या स्यू वडो
और कोई सिरजण !
२७-७-८६

चीड़ी चीड़ो !

कोनी देख्यो
कदेई एकली
चिड़कली नै
घाळता आळो ।
उडतो रवै ओळू दोळू
वीं रो मोट्यार चीडो,
पण करै
सिरजण सारू
घण करी'क खेचळ चीडो
निभावै चीडो तो
कणाई त्यार
एकाध घोचो
ससार रो बैवार
पण चिड़कली री
आख्या मै
एक भविस रो सपनो
एक अनदेखी साच,
जकी कोनी लेण देवै
अनेक ही
कोई जामण नै जक ।
२५-८-८६

साची बात !

दनू आभो तकतां तकतां
आयो मेह असाढ़ उतरतां,
विरगा मरती धरती भीजी
मोठ गुंवार बाजरी बीजी,
माथ निकळयो सूखो सावण
भादूड़े ने दे ओळावण,
पण कुण किण रो कारज सारै
सगळा भाजै मन रै लारै,
के कुदरत री करां बुराई ?
मिनख मिनख में आ खोटाई !
२६-८-८६

भरम !

मेलतां ही
एक पग आगे
आ'ग्यो
वा ही
सागी गेलो मुडागे
जको छूटग्या हो
घणेक पैली लारै,
इयां ई
सगळो संसार
साव लुक मींचणी री रमत,
नहीं ई में
कोई कठेई गमै
न कोई लाधै,
ओ तो रूळ्योड़ी दीठ रो
एक भरम फकत !
६-६-८६

पडूत्तर !

लागै
जागतै नै
जगत साचो
नींद में सूतै नै
सपनो,
किसो साच
किसो झूठ ?
का सोचयूं ईं ही भरम !
ठमगी कलम
देख'र दरपण
अणभूतीज म्यो मरम
दोन्यूं ही
जीव रा ईठ ।
दीठ'र अदीठ ।
पेट'र पीठ ।
२५-६-८६

सरब भकसी !

कुण है इस्यो
जको
मिला सकै
काळ री अपलक आंख स्यूं
आंख !
इण सरब भकसी री
लपलप करती
सोनै री जीभ
आ बासदै,
आ आखी धरती
पसारयोड़ी हथेळी
जिण री गरमी स्यूं
पिळगळ'र हुज्यावै नागा
डीघा हिमाळा,
नाच कूद'र
जकी पर
थाप ज्यावै
बापड़ा वडबोला समन्दर !
ओ ममतो बायरो
इण रो रणजयी घोड़ो
थाम सकै लगाम
आ किण री खिमता !
ओ गिगनार ही
एक इस्यो
जको कोनी करै
चींनीं'क गिनार
सुण'र
बादळियां रै
ओलै लुक्योड़ै
इण डाकी'रीं डकार !
१६-६-७६

तारा !

गिटग्यो
चटोकड़ो अंधेरो
सूरज रो
तातो पतासो,
छपड़क्या
जीभ पर फाला
अै ही
वींकां सारू
आभै रा तारा !
२१

सूरज !

ले ज्यावै
वगत
दिन दळ्यां
आपरै घरा
अंधेरै री
छिदी बणगट री
बोरी में
घाल'र
तारा रा कणुका,
पीस'र
बां नै
अगूण री चाकी मे
घर धिराणी ऊषा
रोज बणा देवै
सूरज री
तातो रोटियो ।
२८-६-८६

मिनख'र तितळी !

समझ'र
लाल रंग रे
चोळे नै
गुलाब री फूल
आ'र
बैठगी
घूमै पर
सतरंगी तितली,
करयो
पकड़णै मारू
जद हाथ ऊँचो
बा उडगी
सोच'र
किया हुयो
इण रूडे रूंखड़े री
लूंकड़े मिनख जिस्यो सभाव !
६-१०-८६

गतागम !

कहणी जकी करीजै कोनी
लिखणी जकी लिखीजै कोनी,
सबद बिरम अपडीजै कोनी
रचणा रम्य रचीजै कोनी,

एकल रास घलीजै कोनी,
राधा बिना रमीजै कोनी
भोळो जीव पतीजै कोनी
सिचल्यो इंयां रहीजै कोनी !
७-१०-८६

नेता'र जनता !

ममभ्रूली
सत्ता रा लोभी
नेता
जनता नै
कान में
टाम्योड़ी बीड़ी,
सिलगा दै
जणां कणाईं
काढ'र
चुनाव री तूळी,
फेर कोनी छोडै
निमधा
बापड़ो री लार
जठै तांईं
नहीं दाझै
या री
आपरी आगळ्यां !
७-१०-८६

सौगात !

सै बगत बगत री
बातां है,
दिन थोड़ा लाबी
रातां है,

जे पूरो नेह
नहीं भरसी,
दिवले री बाती
जळ मरसी,

बै माटी री
अपघातां है,
सै बगत बगत री

कुण !

कुण
फूल में
विगसे'र झरे !
कुण
फळ में
पाके'र खिरे !
कोई कवै
बीज
कोई कवै
वगत
पण मनैं लागै
आ
अणत री
अणाद रमत !
८-१०-८६

सौगात !

सै वगत वगत री
वातां है,
दिन ओछा लांबी
रातां है,

माटी !

माटी रो ईसर पुजीजै
माटी री गणगोर,
आग, पून, जळ, अंबर आं में
माटी है सिरमोर ।

जीव जिनावर पांख पखेरू
फळ फूलां रा रूंख,
देह धरावै जिका जुण नै
मा माटी री कूख,

मरबै खप्यै नै, सडबै गळ्यै नै
कुण दूजो ले माम ?
तथागुगत सगळा री करणी
माटी रो ही काम,

सूरज चांद सितारा अणगिण
माटी रा आकार,
किण री खिमता अको नाप लै
माटी रो विसतार ?
१३-१०-८६

भेद बुध !

फूल'र्
सूळ रै
मूळ में
बवै
रूंख रो
वो ही सागी रस
फेर किया हुई
रचणा री किरिया
न्यारी न्यारी !

× × ×

आ मिनख री
भेद बुध
जकी कोनी देख सकै
बिन्या करयां टुकड़ा
आखी साच रो
धणियारो !

१४-१०-८६

कुंआरी साच ?

जगनै
साच री कूख स्यूं
जलमो
पण कोनी मानै कोई
आ बात नै
जका
मानै साच नै
अजन कुंआरी !
१४-१०-८६

उठ, कर कूच !

कयो
मतो हारयोड़ै
बटाऊ नै गेलो
काईं हुवै थकेलो !
मैं तो चालूं
हर पल, हर खिण
को रात गिणूं न दिन
उठ, कर कूच
मनैं सुणीजै
इकसंग
तनैं बुलाती
मंजल री हेलो !
१४-१०-८६

साच !

टूटग्यो
आज्या रो भरम
अबै तो लागै
ओ संसार
एक अणहूणी
जकै में
निरथक है सोचणी
व्यवस्था री बात
चाळणो पड़सी
नारा उछाळती
भीड़ रै रेळै रै सागै
जकै में
कोई कोनी समझै
किण नै ही
ओळखणै री जरूरत ।
१५-१०-८६

औघड़ !

कोनी बगत रै
आँख
पण
फिरै रुळतो
पकड्या
डोकरी पून री आंगळी
दुबै
धरती रै गोवणियै मैं
रात री भैंस रो दूध दिन
सेकै
तारां री भोभर मैं
चाद री बाटी
धरै आमै रै, थाळ मैं
सूरज री डळली
छमकै समदर रो
मलूणो रायतो
गिटै ग्यासिया सागै
आखी जीवा जूण
ईं गिग्याहीण नै
भोळो मिनख कवै दूण !
१५-१०-८६

सन्दर्भ !

जे नहीं जाणें तू
चितराम रै
सागे जुड़योड़ी कथा
तो उनें लागसी
ऊंठ पर मथार
ढोला'र मारू
कोई गेलै बगता बटाऊ,
कोनी ठेरे वाँ पर
चनेक ही थारी
अणसैंधी दीठ
चट सिरक'र
टिक ज्यासी
वीं फूळ रै
चितराम पर
जकै री मीठी सौरम है
थारी सांसां नै चीत !
१५-१०-८६

चौमासो !

बगतां
चौमासे री
गेळी ज्योडी रातां मैं
आवै खेता में ऊभै
लीलै धान री
मन मोवणी सोरम,
गमकै काकडिया'र मतीरां रा
चिंया'र फुलडा
जाणै खोल दियो हुवै
कोई गंधी
फुलेल रो अतरदान,
कोनी पनपै पण
भूख ज्यूं भूभती इण
जीवट री धरती पर
पोतडां रा अमीर
मोलसिरी, हर सिंगार'र रात राणी
पण मैकै
इण सोनल रेत री
राम रमै जिसी रोही मैं
करमै'र कमतरियै री
आत्मा री सुवास ।
१६-१०-८६

आलोक पुरुष !

क्यो
पून्यू री रात नै
दीवट पर बैठो
साव उदास दिवलो
अवै तू सोच लेई
गुमेजण
थारो चनरमा,
काल स्यू ही
वधण लाग ज्यासी
म्हारी कुमळायोडी जोत
आता आता
म्हारी मायली मावस
वण ज्या स्यू मैं ही
ई अंधेरीज्योडी धरती रो
आलोक पुरुष !
२०-१० ८६

दिवलो !

तारां री मेखा ठोक्योडा
तम-गढ मोळ किंवाड
डरे मारता हाथी भेटी
भींचे मावठ जाड,

पण दिवले री लौ री सुई
तोड़ै बजर-कपाट,
किरणां री रेती सूरज री
बेगी देवै काट !
१६-११-८६

दिन'र रात !

बीतता ही
दिन पतझर
आयो
गगण वन में
बसन्त,
फूटगी
तम रूंखड़े रे
रूं रूं में
तारक मींझर
फैलगी
चौफेर दिसावां में
उजास री मीणी मैक
बाजण लागग्यो
मतेई
मन मुरली पर
मिलण रो गीत
सुण'र आवै
खितिज ओट स्यूं
निकल'र
चन्द्रमुखी राधा।
३०-१-८०

नीमड़ो

अमरित रस रो
झारो नीम,
मीठो लागे
खारो नीम,

अणसारा रो
सा'रो नीम,
थारो है
पतियारो नीम,

रोग असाध
नसावे नीम,
मरता मिनख
जिवावे नीम,

शूरा शरणै
आवै नीम,
मोटा घाव
सुखावै नीम,

थाक्या नै
सैळावै नीम,
ठंडी छ्या
बिछावै नीम,

राधा किसन
हिंडावै नीम,
गीतां में
गम ज्यावै नीम,

जठै कठै
उग ज्यावै नीम,
सब स्यूं हेत
निभावै नीम,

जामण ऊपर
धारै नीम,
लुळ लुळ घणो
जुहारै नीम,

आभै नै
ललकारै नीम,
ऊँचा हाथ
पसारै नीम

डांफर मवै
दिगम्बर नीम,
लू लिपटावै
उरवर नीम,

कद निसकारो
नाखे नीम :
छाती करडी
राखे नीम,

चैत लागतां
ऊलै नीम,
हीरक मींझर
फूलै नीम,

नीलम पन्नो
हरियल नीम,
तांबा वरणी
कूपळ नीम,

मधु सौरम
मैकारै नीम,
मोमाख्या
भणकारै नीम,

रतन निंबोळ्या
ल्यावै नीम,
पाक्या कनक
लजावै नीम,

आंध्या मैं
सुसावै नीम,
मेहा नेहां
न्हावै नीम,

पाख पखेरू
वासो नीम,
सैं'रो मामो
मासो नीम,

उपगारी
वनवासी नीम,
बणग्यो
गाव निवासी नीम,

म्हारो है
पाड़ोसी नीम,
समदरसी,
सतोषी नीम,

सगुण निगुण
सन्यासी नीम,
म्हारी मथरा
काशी नीम,

कळप बिरछ
घणियारे नीम,
नचिकेता
जमद्वारे नीम,

नीलकठ
विष मारे नीम,
कद कोई स्यू
हारे नीम ?

थारो सफळ
जमारो नीम,
जस रो घुरे
नगारो नीम,

पण तू बेली
म्हारो नीम,
दे स्यू मैं
रैकारो नीम ।

यद निसकारो
नाखे नीम ?
छाती करड़ी
राखे नीम,

चेत लागतां
ऊलै नीम,
हीरक मींझर
फूलै नीम,

नीलम पन्नो
हरियल नीम,
तांबा बरणी
कूपळ नीम,

मधु सौरभ
मैंकारै नीम,
भोमाख्यां
भणकारै नीम,

रतन निंबोळ्यां
ल्यावै नीम,
पाक्यां कनक
लजावै नीम,

आंध्यां मैं
सूसावै नीम,
मेहां नेहां
न्हावै नीम,

पाख पखेरू
वासो नीम,
सैं'रो मामो
मासो नीम,

उपगारी
वनवासी नीम,
बणस्यो
गांव निवासी नीम,

म्हारो है
पाडोसी नीम,
समदरसी,
सतोषी नीम,

सगुण निगुण
सन्यासी नीम,
म्हारी मथरा
काशी नीम,

कळप बिरछ
छणियारै नीम,
नचिकेता
जमद्वारै नीम,

नीलकठ
विष मारै नीम,
कद कोई स्यू
हारै नीम।

थारो सफळ
जमारो नीम,
जस रो घुरै
नगारो नीम,

पण तू बेली
म्हारो नीम,
दे स्यू मैं
रैकारो नीम।